सहजता की भव्यता

पराग-संचयिनी मृदुला सिन्हा का जीवन-मधु

प्रधान संपादक **बल्देव भाई शर्मा**

सहजता की भव्यता
पराग-संचयिनी मृदुला सिन्हा का जीवन-मधु
प्रधान संपादक
बल्देव भाई शर्मा

सहजता की भव्यता

पराग-संचयिनी मृदुला सिन्हा का जीवन-मधु

प्रधान संपादक

बल्देव भाई शर्मा

परामर्शदाता

डॉ. कमल किशोर गोयनका

संपादक मंडल

डॉ. रामशरण गौड़ **डॉ. अरुण कुमार भगत**

डॉ. ओमप्रकाश शर्मा **सूर्यप्रकाश सेमवाल**

संपादन सहयोग

अखिलेश कुमार शर्मा **गौरवेश कुमार**

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

प्रकाशक • प्रभात प्रकाशन
4/19 आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-110002
सर्वाधिकार • सुरक्षित
संस्करण • प्रथम, 2018
मूल्य • बारह सौ रुपए
मुद्रक • आर-टेक ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

SAHAJTA KI BHAVYATA *Ed.* Baldeo Bhai Sharma ₹ 1200.00
Published by Prabhat Prakashan, 4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-2
e-mail: prabhatbooks@gmail.com ISBN 978-93-5266-541-9

अनुक्रम

संपादकीय : अरथु अमित अति आखर थोरे *13*

शुभकामना संदेश

1. श्री रामनाथ कोविंद, भारत के राष्ट्रपति 19–31
2. श्री एम. वैंकेया नायडु, भारत के उपराष्ट्रपति
3. श्रीमती सुमित्रा महाजन, लोकसभाध्यक्ष
4. श्री नरेंद्र मोदी, भारत के प्रधानमंत्री
5. श्री मोहनराव भागवत जी
6. श्री भय्या जोशी
7. श्री लालकृष्ण आडवाणी
8. श्रीमती प्रमीला मेढे
9. श्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय गृह मंत्री
10. श्री रामनाईक, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश
11. श्रीमती सुषमा स्वराज, केंद्रीय विदेश मंत्री
12. श्री नंदकुमार सिंह चौहान

आशीर्वचन

1. जगद्गुरु श्री शंकराचार्य 35
2. मोरारि बापू 36
3. श्री श्री रविशंकर 37
4. स्वामी रामदेव 38
5. स्वामी निरंजनानंद 39

परिचयात्मक

1. मृदुला सिन्हा : जीवन और चिंतन-सृजन —अखिलेश कुमार शर्मा 43

खंड-1

संस्मरण, समीक्षा, सद्भाव और उद्गार

(क) घर-परिवार

1. प्रश्न अनेक, उत्तर एक —डॉ. रामकृपाल सिन्हा 79
2. भउजी —सुशीला मिश्रा 80
3. कर्मठता व निष्ठा की प्रतिमूर्ति —अभय कुमार सिंह 82
4. मेरी धनमन —कामेश्वर प्रसाद सिंह 83
5. माँ —नवीन सिन्हा 85
6. सास का पत्र होनेवाली बहू के नाम —संगीता सिन्हा 86
7. My Mother is the most inspirational woman —Dr. Praveen Sinha 91
8. You as my mother-in-law for seven lifetimes —Kalpana Kanwar 92
9. एक पत्र बहू कल्पना के नाम —कल्पना कंवर 94
10. My Mom —Meenakshi Sinha 98
11. Role model for everyone —Ranveer Chandra 103
12. ऐसी हैं मेरी मौसी —राजीव रंजन 104
13. My Daadi is my inspiration —Hansa Sinha 106
14. My Daadi —Samridhi Sinha 107
15. Significant Hindi author —Dhruv Sinha 109
16. My Grandma —Dheer Sinha 110
17. Happy B'day Naani —Radhika 111

(ख) बृहत्तर परिवार

1. सदाबहार सरस क्षण —सुधा सिन्हा 112
2. अपने पारिवारिक संबंधों के बीच —डॉ. अहिल्या मिश्र 114
3. बाल-सखी —धर्मशीला शास्त्री 119
4. मामी —महंथ राजीव रंजन दास 122
5. उनसे मिलने का आनंद —मीना शाही 125
6. सहजता की भव्यता —सूर्यबाला 127
7. जैसा मैंने उन्हें जाना —शीला झुनझुनवाला 130

8. एक सरल-सहज प्रबोधिनी —क्रांति कनाटे 134
9. मेरी चाची —डॉ. विद्या सिन्हा 137
10. प्रखर कर्मयोगिनी श्रद्धेया भाभीजी —डॉ. देवेनचंद्र दास 'सुदामा' 141
11. सहजा-सरला मृदुला दीदी —डॉ. कन्हैया सिंह 144
12. आत्मीय-अंतस के अनहद नाद का अक्षुण्ण उत्सव —पंडित सुरेश नीरव 147
13. अपराजेय निष्ठा —ऋता शुक्ल 150
14. ममत्व की मेहँदी का अमिट रंग है, वह एक खास मुलाकात…! —डॉ. विमलेश शर्मा 152
15. मेरी सखी —उमा मालवीय 156
16. आत्मीया मौसी —डॉ. जूही समर्पिता 157
17. श्रद्धा एवं विनम्रता की प्रतीक —वेद प्रकाश कुमार 160

खंड-2
समाजबोध की विधायक दृष्टि

1. अनुकरणीय व्यक्तित्व —श्रीधर पराड़कर 163
2. सामाजिक समरसता और साहित्य की शिखरता का समन्वित व्यक्तित्व —डॉ. विंदेश्वर पाठक 166
3. शब्दों से महामहिम —डॉ. मालती 169
4. नारियों की शक्ति-स्तंभ —विमला बाथम 173
5. सामाजिक सरोकारों की स्वायत्त 'संस्था' —डॉ. ओम प्रकाश शर्मा 175
6. चरैवेति-चरैवेति का मूलमंत्र —मनोहर पुरी 178
7. अपनी सीमा का कभी अतिक्रमण नहीं किया —आनंद भारती 181
8. लोक साहित्य में ज्ञान-परंपरा —डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति 184
9. सूर्या संस्थान नोएडा की अध्यक्ष के रूप में मृदुलाजी —देवेंद्र कुमार मित्तल 186
10. एक अनुकरणीय व्यक्तित्व —पी.के. दशोरा 192
11. बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी —डॉ. शोभा भारद्वाज 194
12. महिमामयी गरिमामयी सरस्वती पुत्री —भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता 198
13. लोक संवाद की प्रखर वक्ता —डॉ. जनार्दन यादव 199
14. अनवरत साहित्य-समाज साधना की प्रतीक —डॉ. वेद प्रकाश शरण 201

खंड-3
संवाद स्तंभ—पत्र और पत्रकारिता

1. लोकतंत्र के 'पाँचवाँ स्तंभ' की संस्थापिका —अच्युतानंद मिश्र 205

लोक साहित्य में ज्ञान-परंपरा

—डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति

जन-जीवन के अनुभूत ज्ञान की धरोहर लोक साहित्य में प्राप्त होती है। यह परंपरा से प्राप्त ज्ञान का बड़ा स्रोत है। संस्कृति, सामाजिक व्यवहार, उत्पादन, व्यवसाय, इतिहास, राजनीति, ज्योतिष, कृषि, प्रबंधन, आयुर्वेद इत्यादि की ज्ञान-परंपराएँ साहित्य के वाचिक और लिखित रूपों में प्राप्त होती हैं।

लोक में व्याप्त ज्ञान परंपरा के संग्रह और प्रसार में हिंदी और हिंदी की बोलियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इस क्षेत्र में हिंदी को समृद्ध बनाने के लिए अनेक विद्वानों ने कार्य किए हैं। इनके कार्यों को अकादमिक मंच पर लाना हमारा दायित्व है।

इस कार्य से जनपदीय भाषाओं के प्रतिनिधित्व में हिंदी की भूमिका और अधिक मुखर होगी। हिंदी को सशक्त बनाने में यह कार्य वरदान सिद्ध होगा। न केवल ज्ञान विषयों के क्षेत्र में अपितु भाषायी संरचना और साहित्य रचना के क्षेत्र में भी हिंदी लोक साहित्य का प्रतिनिधित्व करके स्वाधीन और सफल हो सकती है। मध्य प्रदेश भारत का हृदय प्रदेश है। यहाँ पाँच प्रमुख लोकांचल हैं, यथा—बुंदेलखंड, बघेलखंड, निमाड़, मालवा एवं चंबल क्षेत्र, साथ ही बहुत बड़ी संख्या में यहाँ जनजातियाँ निवास करती हैं, जिनकी अपनी मौलिक संस्कृति है। इन सब अंचलों की अपनी लोकभाषा, संस्कृति है। लोक भाषाओं और उसमें समाई संस्कृति से विमुख होते जाने के कारण हम उसकी मौलिकता और सृजनशीलता से भी दूर होते जा रहे हैं। लोक समाजों में शिल्प, कला, स्वास्थ्य, कृषि, जल, पशु, शिक्षा एवं संस्कार आदि क्षेत्रों में संरक्षण और संवर्धन की अपनी पद्धतियाँ विकसित हुई हैं। इन पद्धतियों के प्रोत्साहन और लोक व्यापीकरण के लिए लोक संस्कृति में कहावतों, मुहावरों, पहेलियों, गीतों एवं आख्यानों की वाचिक परंपरा रही है। ज्ञान की इस परंपरा से हमें रूबरू होना चाहिए तथा इस ज्ञान को समाज उपयोगी बनाने के लिए शैक्षणिक मंचों पर विचार-विमर्श किया जाना चाहिए।

वास्तव में हम बचपन में अपनी आदतें बनाते हैं, धीरे-धीरे वे आदतें हमारी पहचान बन जाती हैं, हमारी मौलिकता बन जाती हैं और आगे जाकर वे हमारे संपूर्ण जीवन को निर्धारित करती हैं, प्रभावित करती हैं। एक निश्चित आयु के बाद उन आदतों में परिवर्तन लाना असंभव-सा हो जाता है। जाने-अनजाने में आदतें व्यक्ति के स्वभाव में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती रहती हैं।

यदि ये आदतें सकारात्मक हों तो पूरे समाज का कल्याण करती रहती हैं, किंतु यदि नकारात्मक हों तो व्यक्ति को रह-रहकर परेशान करती रहती हैं और अपनी हर आवृत्ति पर कुछ नई सीख या संकेत दे जाती हैं। इस बात को यदि दो पंक्तियों में कहा जाए तो बघेली में कुछ इस प्रकार से कहा जाएगा—

> "जेकर कौन सुभाव है सो जड़ से ना जाए।
> नीम न मीठी हो सकै चाहे गुड़ से खाय।।"

लोकोक्तियाँ थोड़े से शब्दों में अर्थ-गांभीर्य से समेटे हुए समाज के सामने आती हैं। समाज के परिप्रेक्ष्य में कम शब्दों में कही गई महत्त्वपूर्ण बातों को लोकोक्ति के रूप में स्थान प्राप्त है। ये समाज के द्वारा अनुभव किए जाने के बाद समाज हित में कही गई बातें होती हैं। लोकोक्ति या मुहावरे इसके लिए अत्यंत सशक्त, उपयुक्त एवं लोकप्रिय माध्यम हैं।

प्रो. श्रीराम परिहार के शब्दों में कहें तो सृष्टि मानव द्वारा निर्मित नहीं है, ये किसी परम शक्ति द्वारा निर्मित है। भूमि माता है और हम इसके पुत्र हैं और इसी को मानते हुए ज्ञान-परंपरा का विकास किया गया है, जिसमें तीन महत्त्वपूर्ण बिंदु हैं—ईश्वर, प्रकृति एवं मनुष्य। यही त्रिक आदि चिंतन का केंद्र है। लोक शब्द सीमित नहीं है, इसका अर्थ बहुत व्यापक है। पृथ्वी की भौतिक संपदा हमारे पास है और मनुष्य इसका अंधाधुंध प्रयोग कर रहा है। लोक और वेद को अलग नहीं मानना चाहिए। समाज के सभी वर्गों के स्वीकृत किए बिना कोई भी अनुष्ठान पूर्ण नहीं होता। इस लोक और लोक-परंपराओं को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है।

भाषा एवं अनुवाद विभाग, अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय भोपाल में 7 जनवरी, 2016 को राष्ट्रीय संगोष्ठी 'लोक साहित्य में ज्ञान-परंपरा' विषय पर सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं माननीय श्रीमती मृदुला सिन्हाजी ने कहा कि लोकपर्व छठ में सृष्टि सृजन का आधार है। बिहार का यह लोकपर्व प्रकृति प्रदत्त है, जो लोक को प्रकृति से जोड़ता है। इस पर्व में सूर्य भगवान् की आराधना की जाती है तथा सूर्य भगवान् से हल चलाने के लिए दो बैल तथा हलवाहा सेवक एवं सेविका, बेटा एवं बहू तथा बैना बाँटने के लिए बेटी माँगी जाती है।

उन्होंने स्वलिखित बिहार की लोककथाएँ पुस्तक का हवाला देते हुए कहा कि आज कथा, कहावतें, लोकोक्तियों, मुहावरों में भले ही भाषा का परिवर्तन हो, परंतु भाव में परिवर्तन नहीं है। मौलिक चिंतन लोकभाषा में ही होता है। उन्होंने कहा कि जब वे चिंतित होती हैं तो वे अपनी माँ के लोकगीतों को गुनगुनाकर चित्त को शांत कर लेती हैं।

प्रभारी, भाषा एवं अनुवाद विभाग
अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
मो. : 8962115238

□